IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों के सुधार हेतु योजनाएँ''

शोध निर्देशक

डॉ0 पवन कुमार सिंह

असि0 प्रोफेसर–भूगोल विभाग

सल्तनत बहादुर स्नात्कोत्तर

महाविद्यालय, बदलापुर(जौनपुर उ0प्र0)

शोधार्थी

धीरेन्द्र कुमार यादव

एम0ए0, (भूगोल)

सल्तनत बहादुर स्नात्कोत्तर

महाविद्यालय, बदलापुर(जौनपुर उ0प्र0)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों के सुधार हेतु योजनाओं के अन्तर्गत मिलिन बस्तियों का भौगोलिक अध्ययन है। मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में प्रयास करते हैं तथा मलिन बस्तियों में वृद्धि होने से अनेक नगरीय समस्या उत्पन्न होती है। जैसे आवास की समस्या, स्थान की समस्या, परिवहन की समस्या, जलापूर्ति की समस्या, विद्युत की समस्या, प्रदूषण की समस्या, कूड़ा–करकट व मल–मूत्र विसर्जन की समस्या बढ़ती जा रही है। इससे नगरीय क्षेत्रों में प्रवास के प्रवाह को रोका जाये तथा मलिन बस्तियों में सुधार किया जाये। यह कार्य सभी व्यक्तियों के सहयोग से जागरूकता उत्पन्न कर मलिन बस्तियों की समस्या को सुधार हेतु भारत सरकार के द्वारा विभिन्न योजनाओं को जनहित में लाकर सुधार किया जा सकता है। वर्ष 1950 के बाद मलिन बस्तियों के सुधार हेतु बड़े महानगरों में मलिन की समस्याओं को सुन उन्नति की जा सकती है। मलिन बस्तियों में जो लोग रह रहे है। उन्हें वही पुनः स्थापित किया जाये तथा निकट के स्थान पर मकान का निर्माण कराया जाये तथा साथ ही साथ शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य पेयजल की सुविधा, शौचालय, सीवर व्यवस्था, जल निकासी एवं सामुदायिक विकास, खेल का मैदान, अस्पताल, पुलिस स्टेशन, पार्क, सड़क, गलियों का चौड़ीकरण आदि योजनाओं को मलिन बस्तियों में लाकर सुधार किया जा सकता है।

प्रस्तावना :–

अध्ययन क्षेत्र लखनऊ महानगर भारत के सर्वाधिक आबादी वाले राज्य उ0 प्र0 की राजधानी है। लखनऊ महानगर उस क्षेत्र में स्थित है जहॉ ऐतिहासिक रूप से अवध के नाम से जाना जाता है। लखनऊ महानगर हमेशा एक बहुसांस्कृतिक शहर रहा है। यहॉ शिया नवाबों के द्वारा शिष्टाचार, खूबसूरत उद्यान, कविता, संगीत और बढ़िया व्यंजनो के लिए प्रसिद्ध रहा है। लखनऊ महानगर में हिन्दी, उर्दू साहित्य का केन्द्र रहा है। लखनऊ महानगर की भौगोलिक स्थिति 26^0 3′ से 27^0 10′ उत्तरह अक्षांश तथा 80^0 30′ से 81^0 13′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह महानगर स्वनामित मण्डल, जिला, एवं तहसील होने के साथ–साथ एक प्रदेश की राजधानी भी है। '' लखनऊ महानगर उत्तर भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन का केन्द्र भी है। यह प्राचीन गरिमा एवं आधुनिक आकांक्षाओं का प्रतीक है। यहॉ की सभ्यता को संस्कृति एवं सामाजिक व्यवहार के कारण विशेष गौरव प्राप्त है। लखनऊ महानगर के उद्भव के सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं है तथा एक किवदन्ती के आधार पर कहा गया है कि श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण द्वारा इस नगर को बसाया गया था।'' लखनऊ महानगर का क्षेत्रफल 349 वर्ग किमी0 है। समुद्र तल से इस महानगर की ऊॅचाई 123 मीटर है। गंगा नदो के विशाल उत्तरी मैदान हृदय क्षेत्र में स्थित है, जो गोमती नदी के दोनों तटों पर बसा हुआ है जैसे अमराइयों का शहर, मलीहाबाद, ऐतिहासिक काकोरी, मोहनलालगंज, गोसाईगंज, चिनहट, इटौजा है। इस महानगर के पूर्वी भागों में बाराबंकी जनपद, उत्तरी भाग में सीतापुर जनपद तथा पश्चिमी भाग में उन्नाव एवं दक्षिणी भाग में रायबरेली जनपद स्थित है। 2011 की जनसंख्या जनगणना के अनुसार लखनऊ महानगर की जनसंख्या 2815601 ह तथा साक्षरता दर 84.72 प्रतिशत है।

लखनऊ महानगर का भौगोलिक मानचित्र

लखनऊ महानगर मं मलिन बस्तियों का परिचय :–

अध्ययन क्षेत्र लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों की जनसंख्या लगभग 40 प्रतिशत पायी जाती है। महानगर मे आर्थिक विकास का आधार उद्योगों के काम करने की व्यवस्था करना एवं अनियोजित क्षेत्रों में काम है। इस प्रकार एक निश्चित रूप से मलिन बस्तियों की स्थिति नगरों के निकट एवं नदो तट , नालों एवं रेल–पथों के किनारां पर स्थित है।

इस प्रकार मलिन बस्तियों का विस्तार तेजी से बढ़ रहा है। इसका प्रमुख कारण ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी और जनसंख्या विस्फोट माना जा रहा है। मलिन बस्तियों में नियोजित एवं अनियोजित माना जा रहा है। महानगर मे ऐसी मलिन बस्तियां जा कई कई दशक से बसी हैं तथा इन्हें सरकारी विभागों द्वारा मान्यता दी है। ऐसी दशा में मलिन बस्तियों में कच्चे एवं पक्के मकान, विद्युत, मार्ग, जलापूर्ति, जलनिकास मार्ग, सुलभ शौचालय आदि की व्यवस्था की गयी है। इस प्रकार लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों की संख्या 265 है तथा अन्य योजनाओं के द्वारा बसी मलिन बस्तियों की संख्या 222 है। इस प्रकार अनियोजित रूप से बसी मलिन बस्तियॉं नयी विकसित कालोनियों में बसी है। जहॉं आज भी लगभग पूरी सरकारी सुविधा नहीं ह, जैसे– जलापूर्ति, विद्युत आपूर्ति, मार्ग, सड़क व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधा, मनोरंजन के साधनों का अभाव पाया जाता है। इस प्रकार लखनऊ महानगर में 1971 में आवासीय मकानों की संख्या 122693 थी। परिवारों की संख्या 140576 है। 1981 में 159246 था, जबकि परिवारों की जनसंख्या 167194 है। यह असन्तुलित मकानों की संख्या 1991 में अधिक परिवर्तन होकर मकानों की संख्या 270511 थी, जबकि परिवारों की संख्या 293130 है। 2011 में मकानों की संख्या 11410 है, जबकि परिवारों की संख्या 100636 है , इस प्रकार लोग किराये के मकानों मे अपने आर्थिक विकास के लिये कमरे लेने वालों की संख्या अधिक होती जा रही है। लखनऊ महानगर मे मलिन बस्तियों को अब धीरे–धीरे समाप्त करने जा रही है। 1991 में 97 एवं 1996 की सर्वेक्षण के अनुसार अब 222 ही चिह्नित की गयी है। वर्तमान समय 2019 के अनुसार 700 मलिन बस्तियों का ही चिह्नित किया गया है। सारणी संख्या 1.1 के द्वारा दर्शाया गया है।

सारणी 1.1

लखनऊ महानगर मे मलिन बस्तियों के मकानों एवं परिवारों की संख्या

कम सं0	वर्ष	मकानों की संख्या	परिवारों की जनसंख्या
1	1971	122693	140576
2	1981	159246	167194
3	1991	270511	2931360
4	2001		
5	2011	11410	100636

स्रोत :– महानगर योजना पत्रिका 2021

लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों का विकास :–

अध्ययन क्षेत्र लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों के विकास हुतु 1950 से विशेष योजनाओं को लागू किया गया है। मलिन बस्तियों में जो लोग रह रहे हैं उन्हें उसी स्थान पर पुनः स्थापित करने की योजना बनायी जाये। निकट के स्थान पर मकान का निर्माण, स्वरोजगार, आर्थिक विकास हेतु कार्यों को मलिन बस्तियों से दूर न किया जाये। इस प्रकार इन बस्तियों का किराया मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों के अनुसार लगाया जाये जिससे वे सरलता से किराया दे सकें। साथ ही साथ मकान, स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छे होने चाहिये। इनमें चौड़ी सड़कें और गलियों का निर्माण हो। इन स्थानों पर स्कूल, पार्क, खेल के मैदान, पुलिस स्टेशन , अस्पताल आदि की समुचित व्यवस्था होनी चाहिये। लखनऊ महानगर की समस्या समाधान पर विचार करना आवश्यक होगा। यहॉ पर मलिन बस्ती सुधार की कोई विशेष योजना नहीं चलाई गयी, बल्कि सामुदायिक विकास योजना के माध्यम से पेयजल, स्वास्थ्य, सड़कों का निर्माण, जल निकास, शिक्षा व्यवस्था आदि कुछ कार्य किये गये है। ये कार्य यहॉ की दशा को देखते हुए बहुत कम है। यहॉ आवास–विकास बोर्ड तथा एलडीए ने 75 प्रतिशत निर्धन वर्ग के लिये बनाये हैं।

लखनऊ महानगर में एलडीए कानपुर रोड़, राजाजीपुरम, विकास नगर, अलीगंज, इण्दिरानगर, गोमती नगर, जानकीपुरम्, आशियाना, साउथ सिटी बसेरा, एल्डिको जैसी बड़ी कालोनियों में निर्धन आय वर्ग के लिये स्थान बहुत सीमित दिये गये है। प्रायः जहॉ भी इस श्रेणी की कालोनियॉ है, वह अलग–थलग पड़ गयी है। एलडीए की ऐसी कालोनी में पानी, विद्युत, मार्ग, प्रकाश आदि की व्यवस्था नहीं है। ऐसी दशा से निपटने के लिये इन कालोनियों में भूमि की कमी नहीं, योजना को कार्यान्वित करने की व्यवस्था से है। आवास की समस्या के निराकरण के लिये आदिवासी एवं मलिन आवास या इन्दिरा गॉधी आवास योजना के तहत योजना चलायी जा रही है। बगीचा श्रमिक विकास योजना मध्यम आय समूइ योजना, निम्न समूह योजना, मलिन बस्तियॉ परिवेश योजना , मलिन बस्ती पर्यावरण सुधार योजना, मलिन जनसंख्या नियंत्रण, मलिन बस्ती शिक्षा योजना, मलिन स्वास्थ्य व्यवस्था, मलिन स्वरोजगार योजना, मनरेगा आदि योजनाओं का विकास मलिन बस्तियों के लिये किया गया है।

विश्व बैंक के द्वारा मलिन बस्तियों की दशा में सुधार एवं विकास के लिये आर्थिक सहायता प्रदान किया जा रहा है। लखनऊ महानगर प्राधिकरण के द्वारा आवास मलिन बस्तियों की समस्या समाधान योजना आदि के बावजूद भी विकास नहीं हुआ। लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों का बढता जा रहा है। भारत सरकार के द्वारा मलिन बस्तियों के विकास के लिये रोजगार गारण्टी योजना, बायोगैस योजना, रोजगार कार्ड योजना, सीवरों का निर्माण, सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण, सेवा केन्द्रों की व्यवस्थ, धोबियों, मजदूरों, बढ़ई, राजमिस्त्री, प्लम्बर आदि रोजगार देने के लिये नगर निगम के द्वारा व्यवस्था की जाती है।

वर्तमान समय में मलिन बस्तियों के विकास के लिये औद्योगिक क्षेत्र, नगरीय क्षेत्र, कृषि कार्य, खनन कार्य, घरेलू कार्य, व्यापार कार्य, बाजार, फेरी, दुकान, विनिर्माण उद्योग मे रोजगार की सम्भावना बढ़ती जा रही है। इस प्रकार शोधार्थी अपने अध्ययन क्षेत्र में मलिन बस्तियों के विकास के लिये राज्य सरकार की योजनाओं से अधिक लाभान्वित किया जा सकता है।

लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों के सुधार हेतु योजनायें :–

अध्ययन क्षेत्र लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों के विकास के लिये महानगर पालिका, नगरनिगम, डूडा, सेक्टर वार्ड अधिकारी के द्वारा देखभाल किया जाता है। वास्तव में मलिन बस्तियों में जीवनयापन करने वाले लोग अधिकतर गरीब परिवार के लोग रहते है। मलिन बस्तियों के तरफ सरकार का ध्यान देने की आवश्यकता है और राज्य सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता है और राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी भी होती है। उन्हें उस राज्य की नागरिकता प्रदान करने की आवश्यकता भी है मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों को निःशुल्क सभी प्रकार की योजनाओं का लाभ मिलना चाहिये। ऐसे मलिन परिवारों को किसी प्रकार के करों से मुक्त रखना चाहिये, जिससे उनका भी आर्थिक सामाजिक विकास भी किया जा सके।

वर्तमान समय में बहुत से आवासीय क्षेत्रों में मलिन बस्तियों क विकास हेतु सरकार के द्वारा आवास व्यवस्था, जलपूर्ति व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था, ऊर्जा व्यवस्था, निःशुल्क स्वास्थ्य व्यवस्था, मनोंरंजन व्यवस्था, खेलकूद का मैदान, पेयजल व्यवस्था, सफाई व्यवस्था, निःशुल्क खाद्य वितरण योजना, वस्त्र वितरण व्यवस्था, आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। फिर भी महानगरीय क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या हुई जनवृद्धि के कारण मलिन बस्तियों की स्थिति दयनीय देखी जा रही है। अध्ययन क्षेत्र लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों के विकास के हेतु एवं सुधार के लिए विभिन्न योजनाओं को लागू किया जा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत लखनऊ महानगर के मलिन बस्तियों एवं इनमें रहने वाले लोग विस्तृत अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि ग्रामीण जनसंख्या का नगरीय क्षेत्रों में प्रवास हो रहा है, जिसके कारण मलिन बस्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है। तीव्र गति से बढ़ती हुई मलिन बस्तियों के कारण अस्वास्थ्य आवास की समस्या बढ़ती जा रही है। इसके अतिरिक्त अनके नगरीय समस्याएँ उत्पन्न हुई है। जैसे स्थान की समस्या, आवासीय समस्या, परिवहन की समस्या, जलापूर्ति की समस्या, प्रदूषण की समस्या, कूड़ा–करकट मलमूत्र विसर्जन की समस्या, विद्युत एंव ईंधन आपूर्ति की समस्या प्रशासकीय प्रबन्धन की समस्या उत्पन्न होती जा रही है। इसलिये यह आवश्यक है कि एक तरफ इस प्रवाह को कुछ प्रभावशाली उपायों द्वारा रोका जाये और दूसरी तरफ मलिन बस्तियों में सुधार किया जाये। यह केवल एक व्यक्ति के जागरूकता के द्वारा सम्भव नहीं है, बल्कि सभी लोगों में इसके प्रति जागरूकता होनी चाहियें। इस प्रवास गति को रोकने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को नौकरी उपलब्ध करायी जाये। यह सफलता लोगों और सरकार पर निर्भर करती है। बहुत से अन्य विकास शील देशों की तरह मलिन बस्तियों की समस्या को हल करना भारत का पारम्परिक दृष्टिकोण है। मलिन बस्तियों का सफाया और उनके विस्थापन के लिये आवश्यक है कि मानव समुदाय के लिये अच्छे घरों को उपलब्ध कराया जाये एवं लोगों को आवश्यक सुरक्षा प्रदान करायी जाये। मलिन बस्तियों मे तीन–चार मंजिला भवन बड़े ही तीव्र गति से विकसित हो रहे हैं उनको उचित उपायों द्वारा रोका जाये।

1. 1970 के बाद मलिन बस्तियों के सुधार के लिये कोलकता, चेन्नई, एवं दिल्ली में सुधार कार्यकम चलाये गये, जिससे मलिन बस्तियों में विनिर्माण सेवायें प्रदान की गयी। इस कार्यकम के तहत लोगों को सड़क, शुद्ध पेयजल की सुविध सुधरी हुई नालियॉ, ठोस एवं द्रव, प्रदूषित पदार्थों के निस्तारण के लिये प्रवाह की सुविधायें एवं गलियों में बिजली की सुविधायें प्रदान की गयी। कुछ मामलों में से पोषक तत्व स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक कार्यकम में सहायक होतें हैं। यद्यपि ये अधिकांशतः प्रशासनिक इकाइयों के अधिकार में हैं।
2. छठी योजना मलिन बस्तियों की सफाई के स्थान पर मलिन बस्ती सुधार कार्यकमों को अपनाया और इसे देश के अन्य नगरीय क्षेत्रों में फैलायी 133 मिलियन लोग जो मलिन बस्तियों में रहते है। उनके सामुदायिक स्तर में जीवन दशा को सुधारने एवं सभी सुविधाओं का विकास करने के लिये 150 रूपये प्रति व्यक्ति के हिसाब से खर्च करने का अनुमान लगाया गया। लगभग 7 मिलियन परिवारों के इस मलिन बस्ती सुधार कार्यकम का लाभ मिला।
3. पुरानी मलिन बस्तियों का जीर्णोद्धार करना नगर के पुराने क्षेत्रों के आवासों में निवास करने की स्थिति नहीं है। नाले के तट पर बनी बस्तियों की भी दशा ऐसी है कि इन्हे अनुदान देकर सुधार जा सकती हैं।
4. नये क्षेत्रों में मलिन बस्तियों को सीमित किन्तु विस्तृत क्षेत्रों में बसाया जाये।
5. आवास लागत बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि कुछ ही वर्षो में इनको जीर्ण दशा में पहुॅचने से रोका जा सके।
6. मलिन बस्तियों में अवैध निर्माण, बड़ी तीव्र गति से होते है। अतः इसके नियंत्रण के लिये विभाग को सकिय रखा जाये।
7. मलिन बस्तियों में सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित हो ताकि यहॉ रहने वाले लोगों का दृष्टिकोण तथा रहने वाले लोगों के प्रति जनसामान्य का दृष्टिकोण बदल सके।
8. जलापूर्ति के लिये सार्वजनिक रूप में इण्डियामार्का हैण्डपम्प लगाये जाने चाहिये तथा पाइप लाइन बिछायी जानी चाहिये। नगर की सैकड़ों मलिन बस्तियों में पम्प जलापूर्ति की व्यवस्था नहीं है। अलीनगर, सुनहरा, बदालीखेड़ा, चिल्लवा, आजाद नगर जैसी सैकड़ों बस्तियों में ट्यूबवेल लगाये जाने चाहिये।
9. जल निकास के लिये नालियॉ बनाना स्वच्छता के लिये अपरिहार्य है। नगर के अनेक बस्तियों में गन्दगी का कारण जल निस्कासन को ठीक व्यवस्था का न होना है। आलमबाग की दर्जनों बस्तियों में गंदे जल के भराव से बीमारियॉ फैलती है। अतः इस क्षेत्र में जल निकास की व्यवस्था होनी चाहिये।
10. नगर की अधिकांश मलिन बस्तियों में न तो सीवन लाइन है और न तो सार्वजनिक शौचालय ही हैं। खुले में नालो–नालियों में लोग शौच जाने के लिये लोग विवश है। नगर की कुछ मलिन बस्तियों ऊॅटखाना, सितारा बेगम, लालकुर्ती, जुगौली आदि में नेडा ने सार्वजनिक शौचालय, नया मानव मल पर आधारित गैस इकाइयॉ स्थापित की , जिनके विस्तार की आवश्यकता है। इससे बस्ती का पर्यावरण सुधरेगा तथा विद्युत संकट कम किया जा सकेगा।

11. लखनऊ महानगर के अन्तर्गत मलिन बस्तियों के सुधार हेतु योजनायें, पेयजल, स्वास्थ्य व्यवस्था, शिक्षा, खाद्यान्न व्यवस्था, रोजगार व्यवस्था, सड़क मार्ग, हरियाली व्यवस्था, खेल का मैदान, पार्क, जल निकासी, अनुकूल पर्यावरण, चिकित्सालय, औषधि, शौचालय व्यवस्था, परिवहन व्यवस्था आदि।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र लखनऊ महानगर के अन्तर्गत मलिन बस्तियों के विकास एवं सुधार हेतु जो योजनायें चल रही हैं, वे बहुत अच्छी मानी जा रही हैं क्योंकि मलिन बस्तियों के विकास हेतु सरकारें अति संवेदनशील नहीं रही है। भारत में मलिन बस्ती मे वह जनसंख्या निवास करती हैं, जो अत्यधिक गरीब परिवार मे मेल कर रही है। हमारे देश मलिन बस्ती की स्थित एक दयनीय जीवन जीने के बराबर माना जा रहा है। लखनऊ महानगर मे ऐसे लगभग 700 मलिन बस्तियों को चयनित किया गया है जो आज विकास के सुधार हेतु योजनाओं के माध्यम से विभिन्न योजनाओं को चिह्नित किया है। इस प्रकार शोधार्थी के द्वारा लखनऊ महानगर में मलिन बस्तियों के विकास एवं सुधार हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सुधार किया जा सकता है, जिसे प्रशासनिक दृष्टि से जमीनी विकास करने की आवश्यकता है जैसे आवास की व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था, अच्छे रोजगार की व्यवस्था, अच्छे स्वास्थ्य चिकित्सा की व्यवस्था, शिक्षा की व्यवस्था, कौशल मिशन की व्यवस्था, सड़क मार्ग, परिवहन के साधन की व्यवस्था, खाद्यान्न व्यवस्था, मनोरंजन की साधन, पार्क, खेल का मैदान, आर्थिक सहायता, बिजली व्यवस्था, निःशुल्क वस्त्र वितरण की व्यवस्था, व्यापार विनिर्माण कार्यो की व्यवस्था से ही मलिन बस्तियों का दीर्घकाल तक योजनाओं को लाभान्वित करके सुधार किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. लखनऊ महायोजना विकास प्राधिकरण उ0 प्र0 2021 पेज 3
2. डॉ आर0 बी0 मौर्य : मलिनबस्ती वासियों की सामाजिक आर्थिक दशा : 2008
3. लखनऊ नगर निगम क्षेत्र में स्थित मलिन बस्तियांः 2019
4. जनपद सांख्यिकी पत्रिका लखनऊ 2019
5. हिन्दुस्तान टाइम्स 9 मई 1988
6. प्रो0 डॉ ओ0 पी0 सिंह : नगरीय भूगोल : 2016 :शारदा पुस्तक भण्डार
7. समाचार पत्र–पत्रिका लेखक
8. डॉ रामलोचन सिंह : बागवासी नगर का नगरीय अधिवास : 2001
9. शोध प्रबन्ध इण्टरनेट आदि।